Indian Streams Reserach Journal
Vol.2,Issue.III/April; 12pp.1-4

कुमारी. जयश्री बाबासाहेब काशिद

ISSN:-2230-7850

Research Papers

प्रेमचंन्दजी और वि.स.खांडेकरजी के उपन्यास साहित्य में विधवा नारी की स्थिती

कुमारी. जयश्री बाबासाहेब काशिद

प्रस्तावना :–

भारतीय समाज में विधवा नारी एक अभिशाप ग्रस्त स्त्री है। भारतीय समाज ने विधवा नारी को अपने विकास का कभी अधिकार नहीं दिया। विधवा नारी पुरूष की वासना का हमेशा शिकार होती रही है। समाज की विडंबना यह है कि पुरूष अपनी पत्नी की मृत्यू के बाद दूसरी शादी करता हैं, किंतु विधवा नारी को यह अधिकार प्राप्त नहीं हैं। पुरूष पत्नी के रहते हुए भी दूसरी या तीसरी शादी भी कर सकता है किंतु नारी को विधवा होने के बाद पुर्नविवाह करने का का अधिकार नहीं हैं।

नरी का विवाह उसकी बाल्यावस्था में ही हो जाता हैं। पति की मृत्यू के बाद उसे आजन्म वैधव्य की आग सहनी पडती है। विधव नारी समाज की भलाई के लिए उसे अपने सर्वस्व का त्याग देना पडता है। वैधव्य नारी का सबसे बडा कलंक है। विधवा नारी की स्थिती समाज में बडी दयनीय होती है। गरीबी के कारण उसका विवाह किसी दोहाजू से किया जाता हैं, जिसके कारण उसे जीवनभर वैधव्य का जीवन जीना पडता है। समाज और परिवार के कष्ट सहकर उसे अपमान भरी जिंदगी गुजारनी पडती है। उसकी इच्छा होते हुए भी वह किसी अन्य पुरूष को चाह नहीं सकती। समाज में उच्चवर्गीय लोक विधवा नारी की अर्थिक लाचारी का लाभ उठाकर अपनी वासना तृप्ति कर लेते हैं। ग्रामीण परिवेश में विधवा नारियों पर बहुत अत्याचार किए जाते है। विधवा नारी इस समाज से तंग आकर एक तो वह आत्महत्या करती हैं, अथवा वेश्या जीवन की ओर मुडती है।

प्रेमचन्दजी ने अपने समय में विधवाओं की स्थिती अच्छी तरह परखी थी। इसलिए प्रेमचन्दजी विधवा विवाह के पक्षघर हो गये थे। आपको विधवाओं के प्रति सहानुभूति थी। आपके विचार विधवाओं के प्रति सुधारवादी थे। स्वयं प्रेमचन्दजी ने एक बाल विधवा शिवरानी से विवाह करके समाज के सामने एक आदर्श प्रस्तुत किया है। आपने अपने उपन्यासों में विधवा नारी की स्थिती का वर्णन इस प्रकार किया है।

'वरदान' उपन्यास में 'विरजन' एक विधवा नारी है। विरजन को आपने बचपन के साथी प्रताप से प्रेम होता है। विरजन प्रताप को बहुत चाहती है, किंतु विरजन का विवाह प्रताप से न होकर अमीर घर के लडके कमलाचरण से होता है। दोनों एक–दुसरे के सर्वथा विपरीत है। विरजन अपने पति के साथ गृहस्थी में निमग्न होती है और प्रताप का भी उध्दार करना चाहती है।

कमलाचरण की मृत्यू के पश्चात विरजन विधवा होती है। विधवा विरजन के दुःख का वर्णन प्रेमचन्दजी ने इस प्रकार किया है। ''सौभाग्यवती स्त्री के लिए उसका पति संसार की सबसे प्यारी वस्तु होती है। वह उसी के लिए जीती है और उसीके लिए मरती है। उसका हॅसना बोलना उसीको प्रसन्न करने के लिए और उसका बनाव शृगांर उसीको लुभाने के लिए होता है। उसका सोहाग उसका जीवन है और सोहाग का उठ जाना उसके जीवन का अंत है। ''(1) विरजन की जिंदगी का सारा सुख मिट्टी में मिल जाता है।

विधवा विरजन को बहुत कश्ट झेलने पडते हैं। विरजन सारे दुःख और दर्द सहकर भी जीवित रहती है। वह कविता के माध्यम से अपनी पीडा व्यक्त करती है।

'प्रेमाश्रम' उपन्यास में 'गायत्री' के रूप में एक धनवान हिन्दु विधवा का चित्रण किया है। गायत्री निःसन्तान है। उसे कीर्ति और सम्मान की अत्याधिक चाह हैं। गायत्री विधवा होते हुए भी वह यौवन भावना से पीडित है। उसका विलासी मन गलत रास्ते की ओर मुडता है प्यार को वह दो हृदयों का मिलन समझती है।

पति के मृत्यू के बाद युवा विधवा नारी से जीवन भर सतीत्व के पालन की अपेक्षा करना उनके प्रति बडा अन्याय प्रतीत होता है।

'प्रेमाश्रम' की दूसरी विधवा नारी 'विलासी' है। विधवा रूप में विलासी धैर्यवान और सहनशील नारी है। वह अपने परिवार का उदर निर्वाह मेहनत करके करती है। विलासी में आत्मगौरव दिखाई देता है।

'कायाकल्प' उपन्यास में 'वागेश्वरी' एक विधवा नारी है। उसका वैधव्य हिन्दु–मुसलमान साम्प्रदायिकता का दुश्परिणाम है। वह तीर्थवृत, पूजा और अर्चा में अपना जीवन व्यतीत करती है।

'निर्मला' उपन्यास में 'कल्याणी' एक विधवा नारी है। कल्याणी के दो बेटियॉ : निर्मला और कृष्णा है। निर्मला का विवाह भुवनमोहन से नहीं होता है। कल्याणी को निर्मला के विवाह की चिंता होती है। कल्याणी सारा दुःख झेलने को तैयार हैं, लेकिन जवान लडकी घर में रखने को तैयार नहीं है। आर्थिक अभाव के कारण कल्याणी अपनी बेटी निर्मला का विवाह एक बुढऊ से कर देती है।

'निर्मला' उपन्यास में 'रूक्मिणी' एक विधवा नारी है। पति

की मृत्यू के बाद वह अपने भाई तोताराम के घर का सहारा लेती हैं। घर में जैसे अन्य नौकर चाकर है उसी तरह वह भी रहेगी। ऐसी मुन्शी तोताराम की भावना होती है।

'निर्मला' उपन्यास में 'सुधा' एक विधवा नारी है। सुधा का पति भुवनमोहन निर्मला से प्रेम विनेदन करता है। यह बात जब सुधा को ज्ञात होती है तब वह अपने पति की अवहेलना करती है। सुधा का पति पश्चाताप से दग्ध होकर आत्महत्या करता है। सुधा को अपने विधवा होने का दुःख नहीं होता है।

'प्रतिज्ञा' उपन्यास में 'पूर्णा' एक विधवा नारी है। विधवा पूर्णा अनाथनिःसन्तान सुंदर युवती है। पूर्णा अपना शेष जीवन दुःख दर्द में बिताती है।

'गबन' उपन्यास में 'रतन' एक विधवा नारी है। रतन के माता–पिता की मृत्यू रतन के बचपन में होती है। आर्थिक अभाव के कारण मामा रतन का विवाह इंदुभूशण से करते है। जो उम्र में साठ बरस से कम नहीं थे। लेखक के शब्दों में, ''वकील साहब को रतन से पति का सा नहीं अपितु पिता का सा स्नेह था। उसके पास उसे प्रसन्न रखने के लिए धन के सिवा और चीज ही क्या थी?उन्हें अपने जीवन में एक आधार की जरूरत थी संदेह आधार की..... ।''(2)

रतन वकील साहब से सहानुभूति ही नहीं बल्कि उन्हें देवता समझकर उनकी सेवा करती है। रतन अपना सर्वस्व देकर अपने पति को रोगमुक्त करना चाहती है। रतन के सारे प्रयास विफल होते है। वकील साहब की मृत्यू होती है। रतन विधवा होती है। रतन को पैसों की कमी नहीं थी परंतु विधवा होते ही रतन रोटियों के लिए महुताज हो गई।

'गोदान' उपन्यास में 'झुनिया' जवानी में विधवा होती है। ससुराल में उसका कोई सहारा नहीं रहता इसी कारण वह अपनी पित के घर आकर रहती है। विधवा अगर फिर से अपनी जिंदगी बसानी चाहे मन चाहे युवक के साथ रहना चाहे भी तो घरवालों की इज्जत का सवाल उसके सामने खडा होता है। झुनिया विधवा होते हुए भी गोबर से प्रेम करती है। झुनिया एकनिष्ठ प्रेम में विश्वास रखनेवाली स्त्री है। वह अपने घरवालों की परवाह नहीं करती हैं। गोबर के साथ घर छोडकर जाने को तैयार हो जाती है। झुनिया गर्भवती होती है तब गोबर झुनिया को इस अवस्था में अपने घर छोडकर स्वयं शहर भाग जाता है। होरी और धनिया झुनिया को बहु के रूप में स्वीकार कर लेते हैं।

प्रसिध्द हिन्दी आलोचक डॉ. भूपसिंह भूपेन्द्र प्रेमचन्दजी के उपन्यासों में चित्रित विधवाओं की मजबूरी और लाचारी के प्रति संकेत करते हुए कहते है, ''मध्यमवर्गीय परिवारों में विधवा का जीवन अत्यंत दयनीय है। वह पुरूष के दमन तरस्कार एवं शोशण की मूर्ति है। उसे समाज का पददलित उपेक्षित एवं तिरस्कृत अंग समझा जाता है और सभी स्वार्थीजन उसे अपनी कामुकता एवं वासना का शिकार बनाना चाहता है। उपन्यासकार प्रेमचन्दजी ने विधवाओं की इन्हीं विवशताओं, अत्याचारों का विषद वर्णन करके उसे सम्मानपूर्ण स्थान दिलाने का प्रयत्न किया है।''(3)

खांडेकरजी के समय विधवाओं की समस्या काफी तरह सुलझ चुकी थी। खांडेकरजी ने अपने उपन्यासों में विधवा के विवाह भी कराएँ हैं। आज के समाज में विधवा का प्रश्न अब उतना ज्वलंत नहीं रहा जितना कि प्रेमचन्दजी के समय में था। ,खांडेकरजी ने विधवा नारी की स्थिति का वर्णन अपने उपन्यासों में इस प्रकार किया है।

'दो मने' ('दो दिल') खांडेकरजी की उपन्यास की 'ललिता' एक विधवा नारी है। ललिता विधवा होते हुए भी उसके मन में बाळासाहब के प्रति प्रेम भावना का उदया होता है। ललिता अपना सर्वस्व बाळासाहब के प्रति समर्पित करती है। जब ललिता गर्भवती होती है तो बाळासाहब ललिता से मुँह मोड लेते हैं। इसके सारे परिणाम ललिता को भुगतने पडते हैं। परिवार के अन्य लोग भी उसे कलंकिनी समझकर घर से निकाल देते हैं। ललिता ऐसे समय पर भी हिम्मत बॉध लेती हैं। वह एक पुत्र को जन्म देती हैं। प्रकृति अस्वास्थ रहने के कारण ललिता पुत्र को एक पेड के निचे छोडकर चली जाती हैं। पुत्र के प्रति ललिता के मन में मंगलकामनाएँ विद्यमान रहती है। उसी भावना से प्रभावित होकर ललिता अनाथाश्रम के बच्चों की मॉ बनती हैं।

'पांढरे ढग' ('सफेद बादल') की 'कावेरी' एक विधवा नारी हैं। कावेरी अपने ही कम उम्रवाली सहेलियों का साज–शृगांर देखकर सोचती हैं, ''आपल्या वयात मुली नाचत बागडत असताना आपल्यावर कोप–यात बसण्याची पाळी आणली.''(4) (हमारी आयु की लडकीयों की उम्र खेलने कूदने की है और हमपर यह अवस्था आयी हैं।) उसे प्रलोभन मिलते ही कावेरी मोतीराम के प्रेम जाल में फॅस जाती है। जब कावेरी गर्भवती होती है तो मोतीराम मुँह मोड लेता है। कावेरी पश्चाताप से दग्ध होकर अंत में गृहत्याग करती है।

'रिकामा देव्हारा' ('खाली देहुरा') उपन्यास की तारा एक बालविधवा नारी हैं। उसके कोई रिश्तेदार न होने के कारण वह विधवाश्रम में रहती हैं।

'उल्का' उपन्यास की 'उल्का' एक विधवा नारी है। उल्का अपनी संपत्ति का ट्रस्ट निर्माण करके ट्रस्ट के माध्यम से समाजसेवा करती है।

'अश्रु' ('ऑसू') उपन्यास की शंकर की 'विमाता' एक विधवा नारी हैं। उसके मन में हमेशा सापत्न भाव रहता है। शंकर अपनी विमाता का खयाल अच्छी तरह से करता हैं।

'ययाति' उपन्यास की 'राजमाता' एक विधवा नारी हैं। उसे अपनी क्षत्रिय जाति पर अभिमान हैं। पुत्र प्रेम की अपेक्षा उसे अपनी कुलमर्यादा की अधिक परवाह हैं।

प्रेमचन्दजी और वि.स. खांडेकरजी ने विधवा समस्या की गंभीरता और उनकी यातनाओं को पहचाना हैं। उसमें सुधारवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करना दोनों उपन्यासकारों का प्रमुख ध्येय रहा हैं। प्रेमचन्द मध्यम तथा निम्नवर्गिय विधवाओं की निर्बलता का तथा मजबूरी का चित्रण करते हैं। दूसरी ओर वि.स. खांडेकरजी मध्यमवर्गीय पुनर्विवाह करनेवाली विधवा का चित्रण करते हैं। अपने समय के अनुसार दोनों महानुभवों ने विधवा की दयनीय स्थितिपर यथार्थ रूप से लेखनी चलाई है और समाज में इस स्थिती में सुधार होना आवश्यक माना हैं।

'विधवा विवाह' हिन्दु विधवा समस्या का एक महत्वपूर्ण इलाज हैं। इसका कारण है कि हमारी हिन्दू नारियॉ शिक्षित कम हैं और जो कुछ शिक्षित हैं वे सामाजिक और नैतिक शृंखलाओं में इतनी जकडी हुयी हैं कि अपनी स्वतंत्र आर्थिक व्यवस्था करने में पूरी तरह असफल हैं। ऐसी असहाय स्थिति में अगर हमारे युवक विधवा से विवाह करेंगे तो उनका यह कदम सामाजिक क्रांति की दिशा में महत्वपूर्ण सिध्द होगा।

संदर्भ :–

1) मुन्शी प्रेमचन्द	वरदान	87	1969
2) मुन्शी प्रेमचन्द	गबन	122	1964
3) भूपसिंह भूपेंन्द्र	मध्यमवर्गीय चेतना और हिंदी उपन्यास	97	1987
4) खांडेकर वि.स.	पांढरे ढग (सफेद बादल)	60	2006